परदेस में बसी–सखी

जुही

सबला के इस अंक में आपको ज़ानकारी दे रहे हैं–अमरीका के न्यूयॉर्क शहर में काम कर रही महिला संगठन "सखी" के बारे में। अभी तक सिर्फ़ हमारे देश के संगठनों के बारे में हम आपको बताते रहे हैं। यह जानकारी इसलिए दे रहे हैं क्योंकि हमारे समाज में काफ़ी दफ़ा लड़कियों की शादी अमरीका या लंदन जैसे विदेशों में रहने वाले लड़कों से कर दी जाती है। वहां जाकर अगर वह दुख भोगें तो कहां मदद के लिए जाएं। शीतल की कहानी एक मिसाल है उन लड़कियों के लिए और "सखी" एक संस्था जहां वह सहारा पा सकती हैं।

आपबीती शीतल की

मेरा नाम शीतल है। आज मैं अपनी आप बीती आपको सुना रही हूं। आप पूछेंगी क्यों? इसलिए क्योंकि मैं बताना चाहती हूं कि मैंने भी जीवन में काफ़ी दुख झेले हैं। खून के घूंट पीकर चुप रही, सिर्फ़ इसलिए कि मेरे बच्चे मेरे साथ रहें। मेरा घर बसा रहे, पर जब ऐसा नहीं हुआ तो मैंने फैसला किया कि मैं चुप नहीं रहूंगी। डटकर सामना करूंगी और मैंने ऐसा ही किया। आज मैं बहुत खुश हूं। दुख: तकलीफ़ से आज़ाद हूं। खुद अपने पैरों पर खड़ी हूं।

बचपन से जवानी तक

मेरे मां-बाप ने बड़े नाज़ से मुझे पाला-पोसा था। इकलौती बेटी थी। बी.ए. पास किया। सब ठीक चल रहा था। एक दिन कार दुर्घटना में दोनों मां-बाप चल बसे। मैं अनाथ हो गई। मामा के घर रहने लगी।

एक रोज़ मामा नीरज का रिश्ता लेकर आए लड़का अमरीका में रहता था। वहां बड़ी फैक्ट्री चलाता था। उनकी कोई मांग नहीं थी। लड़की राज करेगी। सो मेरी शादी ठीक हो गई। बाद में मुझे पता चला कि नीरज ने मेरे मामा को मुझे ब्याहने के पचास हज़ार रुपये दिए थे।

जीवन नर्क हो गया

शादी हो गई। मैं अमरीका चली गई। बस तभी नर्क के दरवाजे मेरे लिए खुल गये। पता चला मेरे पति पहले से ही किसी अमरीकन लड़की से शादी कर चुके थे। अपनी मां को खुश रखने के लिए एक भारतीय बहू ब्याह लाए थे। तो मुझे सास और सौतन के साथ रहना पड़ा।

नीरज क्या करता था। कहां जाता था मुझे कुछ पता नहीं था। मेरी सौतन और नीरज मकान के एक हिस्से में रहते थे। मैं अपनी सास के साथ

दूसरे हिस्से में। नीरज दिन भर अपनी पहली पत्नी के साथ घूमता-फिरता। मुझे कभी कहीं नहीं ले जाता। कहता मुझे सलीका नहीं है पार्टी में उठने-बैठने का। मैं फूहड़ हूं।

कोई मददगार नहीं

मेरी सास और सौतन मेरी कोई मदद नहीं करती, उल्टा मुझे मारती-पीटतीं, ताने देतीं। दिन रात मैं कोल्हू के बैल की तरह काम में जुटी रहती।

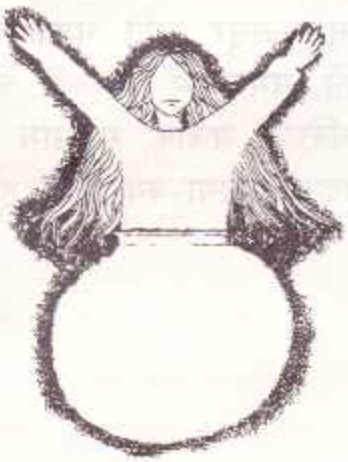

मैंने भारत अपने मामा को इस बीच न जाने कितनी चिट्ठियां लिखीं। पर कोई जवाब न आया। मैं एकदम अकेली रह गई थी। इस बीच मुझे गर्भ ठहर गया। एक तरफ पेट में बच्चा। दूसरी तरफ कमरतोड़ काम और अकेलापन। पर मैं चुप रही। दो साल गुजरे। मेरी सास गुज़र गई। अब नीरज आजाद था। अपनी मनमानी और ज़्यादा करने लगा। वह मुझे तरह-तरह से जलील करता। अपनी सौतन के पैर दबाने को कहता। मेरे सामने उसके साथ छेड़छाड़ करता। मुझे शराब पीने को मजबूर करता। मना करती तो मारता पीटता। मैं तंग आ चुकी थी।

मैंने नीरज से कई बार कहा। मैं भारत चली जाऊंगी। पर वह नहीं मानता। कहता मैं नहीं जा सकती। मुझे घर में बंद करके बाहर जाता। फोन में ताला लगा देता। पांच साल और गुजर गए। मेरी बेटी छः साल की हो गई। एक दिन मेरे सब्र का बांध टूट गया। घर में पार्टी थी। मेरे पति शराब में धुत थे। मुझे खाना लगाने को कहा। खाना लगाने में ज़रा सी देर क्या हुई वह आपे से बाहर हो गया। मेहमानों के सामने उसने मुझे खूब पीटा। यहां तक कि मेरा हाथ तोड़ दिया।

मैंने फैसला किया

मेरे पड़ोस में रुबीना नाम की एक पाकिस्तानी औरत रहती थी। उसने सखी के बारे में मुझे बताया। एक दिन जब घर में कोई नहीं था। मैं खिड़की तोड़कर रुबीना के साथ सखी चली गई। अपनी बेटी को भी साथ ले गई।

वहां की बहनों ने मेरी पूरी मदद की। सबसे पहले तो मुझे रहने को जगह दी। फिर पुलिस में नीरज की शिकायत दर्ज़ कराई। मैं पढ़ी-लिखी थी। मुझे नौकरी दिलाई। छः महीने तक मैं उनके साथ रही। पैसे जोड़े और अपने देश वापस आ गई। मेरे पति ने बहुत हाथ-पैर मारे। मेरे ख़िलाफ़ चोरी की रपट लिखाई। बच्ची को छीनने की कोशिश की, पर सखी की सहायता से हमें हिम्मत मिली।

आज मैं अपने पैरों पर खड़ी हूं। नौकरी करती हूं। मेरी बेटी कॉलिज में पढ़ रही है। मैं सखी की बहुत आभारी हूं। उनकी मदद से ही आज मैं अपने देश में इज़्ज़त से जी रही हूं। अब मैं किसी से नहीं डरती अपनी दुखः तकलीफ़ से आज़ाद हूं। सिर उठाकर जीती हूं। किसी के आगे हाथ नहीं फैलाती। □

सखी का पता:
सखी, पो. बाक्स 20208, ग्रीली स्क्वेयर स्टेशन, न्यूयॉर्क एन.वाई 10001-006, यू.एस.ए., फोन (212)695-5447